.....जीवात्माओं का कोई न कोई धर्म ज़रूर होता है। ये जीवात्माएँ हैं ब्राह्मण धर्म के। ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ तो हुए ब्राह्मण धर्म के। ऐसे (तो) ब्राह्मण धर्म वाले अपन को सिर्फ ब्रह्माकुमार फलाना या ब्रह्माकुमारी फलानी ऐसे नहीं कहते हैं; क्योंकि ब्रह्मा तो हो गया ना। बहुत काल हो गया। वो ब्राह्मण तो कहते हैं कि ब्रह्मा हो गया था, जब बाप ने ब्राह्मण कुल रच फिर उन ब्राह्मणों को देवता बनाया। यह जो गाया जाता है कि मनुष्य को देवता बनाया था। तो मनुष्य जो देवता थे पहले किस धर्म के थे? तो फिर यह समझाया जाए कि पहले–2 मनुष्य शूद्र धर्म के थे। फिर ब्रह्मा ने अपना बनाया तो ब्राह्मण धर्म के हो गए; क्योंकि वर्ण हैं ना। ब्राह्मण भी वर्ण है। देवता वर्ण है, क्षत्रिय वर्ण है, वैश्य वर्ण है, शूद्र वर्ण है और अभी ब्राह्मण वर्ण के बने हैं। इसके पहले शूद्र वर्ण के थे। अब ब्राह्मण वर्ण से देवता वर्ण में आते हैं। देवता वर्ण को कहा ही जाता है विष्णुपुरी, लक्ष्मी–नारायण का राज्य। तो ब्राह्मणों को दान मिलता है। किस द्वारा? बाप द्वारा। बाप ब्राह्मण तो नहीं है ना। बाप निराकार है, उनका कोई धर्म नहीं है। धर्म मनुष्यों का होता है। बाप बैठ करके समझाते हैं कि हे बच्चे! तुम सो शूद्र धर्म के थे, अब तुमको सो ब्राह्मण धर्म में लाया है। फिर इनके बाद में तुम देवताई गोद में जाकर देवता वर्ण में जाएँगे। फिर उतरेंगे। त्रेता में क्षत्रिय वर्ण के होंगे, फिर वैश्य वर्ण के होंगे, फिर शूद्र वर्ण के होंगे, फिर अभी ब्राह्मण वर्ण के बने हो। अभी देवता वर्ण में जाना है; इसलिए पवित्र रहना है; क्योंकि देवता बनना है। यहाँ भारत में हम सतयुग में पैर नहीं डाल सकते हैं, जब तलक हम देवता न बने हैं। नई दुनिया में देवी और देवता ही आते हैं। इस समय में हम ईश्वरीय औलाद हैं, पीछे बनेंगे दैवी औलाद। दैवी औलाद बनने के बाद फिर हम क्षत्रिय (बनेंगे)। देवता धर्म के पहले है ब्राह्मण चोटी। यह चोटी तो याद रह सकती है ना। अभी हम ब्राह्मण हैं, फिर देवता, फिर क्षत्रिय, फिर वैश्य, फिर शूद्र, इतना जन्म भोग कर अभी हमने नाटक पूरा किया है। अभी फिर ब्राह्मण बने हैं। अभी देवता बनेंगे। समझने में कोई तकलीफ है ? बिल्कुल समझने में तकलीफ नहीं है। तो जबकि ब्राह्मण हैं तो फिर ज़रूर पवित्र रहना पड़े ; क्योंकि जब तलक कोई ब्राह्मण न बने (तो) बहन–भाई नहीं बन सकते हैं। तुम अगर ब्राह्मणी हो (और) पति ब्राह्मण नहीं बनते हैं तो फिर तुम भाई–बहन नहीं बन सकते हो। वो अभी शूद्र धर्म में है (और) तुम ब्राह्मण धर्म में हो तो झगड़ा लगेगा; क्योंकि ब्राह्मण वर्ण वाले कच्चे होंगे, अभी पवित्र न बने होंगे तो वो झगड़ा डालेंगे। पवित्र रहती हो? जो...विकार में जाते हैं उनको कभी भी ईश्वर गोद नहीं लेता है। पतित हैं ना। जब गारंटी करे कि हे बाबा, हे ईश्वर! हम पावन रहेंगे, ईश्वर कहो या बाबा कहो बात एक ही है ; तभी बाप गोद में ले सकते हैं, नहीं तो नहीं ले सकते हैं। जब यहाँ गारंटी करते हैं, प्रतिज्ञा लिखकर देते हैं कि शिवबाबा, हम पवित्र रहेंगे। हम ब्राह्मण बनते हैं ना तो हम शिवकुमार–कुमारी कभी भी विकार में नहीं जाती हैं। (वास्तव में) तुम मात–पिता की गोद में नहीं जाते हो। तुम जो कहते हो ना कि तुम मात–पिता, हम बालक तेरे। तो अगर तुम अपवित्र रहती हो तो तुमको हम ऐसे नहीं कहेंगे कि तुम हमारी बच्ची हो। बाबा–मम्मा ऐसे नहीं कह सकें। तो तुम ईश्वर की बच्ची नहीं ठहरी, फिर ऐसे कहेंगे। भले ''बाबा–2'' करती रहो; परन्तु ऐसे तो बाबा बहुतों को कहा जाता है। बुज़ुर्ग को भी बाबा कह देते हैं। तो तुम फिर बाप का वर्सा नहीं पा सकते हो। तुम प्रजा में जा सकती हो; क्योंकि बाप को न जानने से, योग न रखने से तुम्हारा विकर्म विनाश हो नहीं सकता है। विकर्म विनाश न होगा तो सज़ाएँ खाएँगी। सज़ाएँ खाकर फिर तुम प्रजा में चली जाएँगी। फिर प्रजा में जितना पुरुषार्थ करेंगी इतना अच्छा पद मिलेगा। नहीं तो है तो राजयोग, राजाई लेने का योग है; परन्तु तुम पवित्र न बनेंगी तो राजाई नहीं ले सकती हो। ....क्या सुना?....जो भी यह मुरली बजती है तो जो पवित्र रहेंगे उनकी बुद्धि में यह मुरली बैठेगी, नहीं तो निकल जाएगी। कितना भी कोई सुने, पवित्र न रहेगी तो निकल जाएगी। क्यों? फिर दूसरे को समझाना पड़े कि पाँच विकारों को जीतो।

तो कोई–2 कह नहीं सकेंगी कि जीतो। खुद नहीं जीतती हैं तो दूसरों को क्या कह सकेंगी ! तो यहाँ मूल बात यह है। कोई यहाँ से भी रक्त निकाल करके प्रतिज्ञा करते हैं– बाबा, मैं अपवित्र कभी नहीं बनूँगा, श्रीमत पर चलूँगा। तो श्रेष्ठ बनेंगे। जो पवित्र नहीं बन सकते हैं (वो श्रेष्ठ भी नहीं बन सकते हैं)। यहाँ तो ईश्वर कहते हैं काम शत्रु है, इनको जीतो। देखो, गीता के अक्षर हैं ना– काम शत्रु है, बच्चे जीतो। नहीं जीतेंगे तो फिर राजयोग नहीं पा सकेंगी। फिर जितना ज्ञान सुनेंगी इतना ही फिर तुम पाय सकेंगी। बच्ची, ये अगर पवित्र रहती रहेगी; (क्योंकि) ब्रह्माकुमारी तो है, अगर ये पवित्र रहती रहेगी तो राज्य ले सकेगी, अगर नहीं तो फिर प्रजा में चली जाएगी।.....तो राजयोग की है ना। प्रजायोग की तो नहीं है ना। फेल होते हैं तो फिर प्रजा में चले जाते हैं, नापास होते हैं। कहते हैं ना– बच्चे, काम शत्रु है, इनको जीतो। तो बच्चों को भी सबको ऐसे ही कहना पड़े।....ब्राह्मण कुटुम्ब हो जाएँ। ब्राह्मण कुटुम्ब को बाप की दक्षिणा अच्छी मिलती है, जैसे जो पवित्र बनते हैं। ....अबलाओं के ऊपर विख न देने से अत्याचार होते हैं। बरोबर लिखा हुआ है कि जरासिंधी,शिशुपाल, कुम्भकरण,कंस ये अबलाओं को विकार के लिए तंग करते हैं। बहुत हैं जो बाबा को लिखती हैं कि बाबा, हमको इस कंस,जरासिंधी,शिशुपाल इनके जेल से, जंजीरों से कब छुड़ाएँगे? हम विख न देते हैं तो ये हमको मारते हैं। तो बाबा कहते हैं, ये तुम्हारा ड्रामा में पार्ट है। अत्याचार सहन करना पड़ेगा। पीछे धीरे–2 आहिस्ते–2 अपन को छुड़ाती जाओ। फिर बाबा समझाते हैं कि नष्टोमोहा होना पड़ेगा, बच्चों में मोह नहीं जाएगा और एक में बुद्धि का योग लगाएँगी। एक ही को याद करेंगी, दूसरा न कोई और पवित्र रहेंगी। भले कुटुम्ब व्यवहार में रहो ; परन्तु पवित्रता फर्स्ट। ये मंज़िल थोड़ी ऐसी है और बाप को याद भी करना पड़े; क्योंकि वर्सा मिलना है ना। ....करके कुमारियाँ अच्छा लेती है। ये तो सभी भट्ठी में पड़ी थीं ना, तभी ये उनसे बची हैं। बहुत थीं ; परन्तु जैसे ईंट की भट्ठी होती है ना, तो जब ईंट खोलते हैं तो सब एक जैसी नहीं पकी होती हैं। कोई टूट–फूट जाती हैं, कोई आधी पकी होती हैं, कोई बिल्कुल पकी होती है। नम्बरवार होती हैं। सब एकरस तो नहीं होती हैं। .....` कितना पाकिस्तान में भट्ठी में रहीं। बरसों रहीं। तो भी बहुत थोड़े पके रहे। फिर कोई अच्छे पके रहे, (कोई) उनसे थोड़ा कच्चे, कोई उनसे (भी) कच्चे, कोई तो एकदम कच्चे के कच्चे ही। तो फिर (जो) कच्चे के कच्चे (रहे) वो चली जाती हैं, भाग जाती हैं। तो यह सारा राज़ बुद्धि में समझने का है। अगर पवित्र न रहेंगे तो फिर बुद्धि में ठहर नहीं सकेगा। फिर इतना राजाई पद नहीं पा सके; क्योंकि पुरुषार्थ तो राजाई (का करना है।) जैसे ये कहेंगी मैं तो राजाई पद पाऊँगी। यह कौन है? बॉम्बे में या तो दिल्ली में रहती है। स्कूल तो एक ही है। अभी वो राजाई पद पा लेगी। तुम भी अगर गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए पवित्र रहकर दिखलाओ और फिर बाप को याद करते रहो और फिर सर्विस करते रहो तो राजाई पद (पा सकते हो)। ऐसे बहुत हैं तुम्हारे जैसी घरों वाली; क्योंकि फिर बुद्धि में रहता है कि अभी तो ये सब कब्रिस्तान हो जाएगा। यह बाबा ने जो हमारे लिए यह भारत को स्वर्ग बनाया था, अब ये नर्क बन गया है। दुनिया पुरानी हो गई है। अभी बाबा स्वर्ग के लिए स्थापन कर रहे हैं। जब स्थापना पूरी हो जाएगी तब फिर यह सृष्टि न रहेगी। इस सृष्टि का विनाश हो जाएगा। फिर इसके बदली में नई सृष्टि। फिर नए विश्व की राजधानी (होगी)। ये ज्ञान में आते हैं, पढ़ाई पढ़ते हैं तो फिर भक्ति...से छूट जाती है। भक्ति को दुर्गति मार्ग कहा जाता है। यह (है) सद्गति मार्ग। सर्व का सद्गति करने वाला। सद्गति माना इस समय में जो दुर्गति है, उनसे छुड़ाने वाला वा रावण के राज्य से छुड़ाने वाला। अंग्रेजी में कहते ही हैं लिबरेटर। किससे लिबरेट करते हैं? तो यहाँ कहा जाता है आसुरी राज्य से। अंग्रेजी में कहा जाता है शैतान से। वो लोग शैतान कहते हैं। (म्युज़िक बजा) मीठे–2, सिकीलधे (बच्चों) प्रति परलौकिक मात–पिता का यादप्यार और गुडनाइट।